International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-12-2022, Accepted: 06-01-2023, Published: 23-01-2023
Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 28-30

त्रिलोचन शास्त्री–कबीर, तुलसी और ग़ालिब की परंपरा के कवि

डॉ. रम्या पी. आर
अध्यापिका (हिन्दी), भारतीय भाषा विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गुरुवायूर परिसर, त्रिश्शूर, केरल, भारत

सारांश
कवि त्रिलोचन शास्त्री हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख हस्ताक्षर है। उनका जन्म उत्तरप्रदेश के सुल्तानपुर जिले के कटघरा चिरानी पट्टी में सन् 1917 को हुआ था। उनका मूल नाम वासुदेव सिंह था। उन्होंने काशी हिन्दु विश्वविद्यालय से एम.ए. अंग्रेज़ी में की, संस्कृत में शास्त्री की उपाधि प्राप्त की थी। हिन्दी के अतिरिक्त अरबी और फारसी भाषाओं के निष्णात ज्ञाता रहे थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी वे खास सक्रिय रहे। प्रभाकर, बानर, हँस, आज, समाज जैसी पत्र दृ पत्रिकाओं का संपादन किया। त्रिलोचन शास्त्री 1995 से 2001 तक जनसंस्कृति मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। वाराणसी में ज्ञानमंडल प्रकाशन संस्था में भी काम करते रहे। हिन्दी व ऊर्दु के कई शब्द कोषों की योजना से भी जुडे रहे। उन्हें हिन्दी सौनेट जनक और साधक माना जाता है। उनके 17 काव्य सग्रह प्रकाशित हुए हैं। इसके अतिरिक्त कहानी, गीत, गज़ल और आलोचना से भी उन्होंने हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाया।
प्रकाशित काव्य संग्रह

- धरती
- गुलाब और बुलबुल
- दिगंत
- ताप के ताए हुए दिन
- शब्द
- उस जनपद का कवि हूँ
- अरधान
- तुम्हें सौंपता हूँ
- मेरा घर
- चौती
- अनकहनी भी कुछ कहनी है
- जीने की कला

त्रिलोचन शास्त्री हिन्दी के प्रयोगधर्मी कवि रहे थे। उन्होंने भाषा शैली और विषयवस्तु में अपनी अलग छाप छोडी। उनका कवि व्यक्तित्व किसीकी परवाह नहीं की। उनकी मुख्य चिन्ता हिन्दी के जागरूक पाठक और कवि के मध्य सीधे संबंध की रही है। देश के भिन्न इलाके में जागरूक पाठकों का सीधा संबंध त्रिलोचन के कवि से रहा है। अशोक वाजपेयी के अनुसार त्रिलोचन हिन्दी कवियों के समाज में स्वाभिमान की एक बहुत शवीह थें।

मूल शब्दः प्रगतिशील काव्य, प्रयोगधर्मी, जनपद, भेडियाधसान, ध्वनिग्राहक, आधुनिकता

त्रिलोचन शास्त्री की मान्यता है कि आदमी को सामान्यतः सामाजिक कहा गया है। लेखक आदमी है आदमी सामाजिक है अतः लेखक भी अनिवार्यरतः सामाजिक है। समाज को घेरनेवाली समस्यायें, स्थितियाँ उनको भी पकडती हैं। त्रिलोचन शास्त्री अपने पर धैर्य, दृढ़ता, सत्यप्रतिज्ञा टटोलते रहे और ध्वनिग्राहक बनता रहा। दरअसल कवि को ध्वनिग्राहक होना चाहिए समाज में उठनेवाली ध्वनियों को पकडने के लिए, सत्य और यथार्थ का चित्रण करने के लिये। इतना साहस तो कवि में होना चाहिए। कवि कर्म का लक्ष्य भी यही होना है। त्रिलोचन शास्त्री खुद प्रणबद्ध थे किः–

"सिफारिश से, सेवा से गला सत्य का कभी न घोटूँगा" [1]।

यह एक तरह का आत्मविश्वास है जो उन्होंने कबीर, तुलसी ग़ालिब और निराला जैसे महारथ कवियों से अपनाया था। ये भी अपने समय के ध्वनिग्राहक रहे थे। त्रिलोचन जब कविकर्म के उद्देश्य की ओर संकेत करते हैं तब कविकर्म के अधिकारों के प्रति भी हमें सजग कराते हैं तभी तो उन्होंने लिखा थाः–

"अगर कोठरी अँधेरी है तो
उसे अँधेरी समझाने दृ कहने का
मुझ को है अधिकार।"[2]

अपने अधिकारों का सही प्रयोग किसी भी ईमानदार साहित्यकार के लिए समाज को सही रास्ता दिखाने का सशक्त हथियार होता है। इस दृष्टि से कविता की अंतिम जो पंक्तियाँ हैं वे सबसे सार्थक होती हैं–

"लडता हुआ समाज, नई आशा अभिलाषा,
नये चित्र के साथ नई देता हूँ भाषा।"[3]

भाषा, साहित्यकार के लिए अपने संघर्ष की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। भाषा जितनी तीव्र होती है – अभिव्यक्ति की, उतनी ही कविता भी सशक्त होती है। त्रिलोचन की भाषा की शक्ति कवि ने अपने जनपद से ग्रहण की है इसलिए अपने जनपद के लोगों की आशाओं के साथ कविता की भाषा पल्लवित पुष्पित रहती है।

समाज के साथ निरंतर लडता हुआ मध्ययुग का एक संत कवि कबीर, नयी आशा अभिलाषा के साथ नयी दुनिया के नये चित्र के सपने देनेवाले मुगल साम्राज्य काल के महान शायर मिर्जा ग़ालिब और भाषा के प्रयोग धर्मी एवं समन्वयवादी कवि तुलसीदास – असल में त्रिलोचन इन तीनों कवियों के महा संगम है जिनकी अजस्र धाराएँ उनके काव्य संसार को निरंतर सींचती रहीं उर्वर बनाती रहीं।

आज धार्मिक मजहबी कट्टरतावादि ताकतें आपस में टकरा रही हैं। कबीर के युग में भी कुछ ऐसी ही परिस्थितियाँ थीं। कबीर ने एक उदार, स्वतंन्त्र मुक्त व्यक्ति बनकर समाज को नयी दिशा सुझायी। उन्होंने ऐसी स्वतंत्रता अर्जित की और अपने समय में ऐसा कठिन कार्य करके दिखाया।

मध्ययुग में रुढिवादी समन्वयवादी और स्वतंत्र चिंतन करने वाले तीन प्रकार के विचार मिलते हैं। हिन्दु धर्म दर्शन के क्षेत्र में इनमें से समन्वयवादी आचार्यों कवियों में शास्त्रीय प्रमाणों को उदार बनाकर शूद्रों आदि को सामाजिक मान्यता देने के पक्ष में थे। तुलसीदास इसी समन्वयवादी चिन्ताधारा के भक्त कवि थे। किन्तु कबीर इनसे सर्वथा भिन्न स्वतंत्र चिन्तन की ज़मीन पर आ खडे हुए जहाँ उन्होंने सभी शास्त्रीय प्रमाणों, व्यवहारों और आचारों को नकार दिया। अतः उन्हें हिन्दु धर्म शास्त्रीय चिन्तन पद्धति के समर्थकों से भी विरोध झेलना पडा और रुढिबद्ध इस्लाम से भी। त्रिलोचन के शब्दों मेः–

"आशी का उन्मूलन करता था जिसका विष बनता था
जाति वर्ण अहंकार। क़ब्रें खनता था मुल्लों मौलवियों की
झूठी शान के लिये रुढि और भेड़ियाधसान को वह हनता था
शब्द बाण से।"[4]

अपने समय के समाज के मनों में बैठे हुए खौफ़ को, भय को निकालने में कबीर सफल हुए। कबीर अपने समय के सबसे बडा समाज सुधारक थे क्योंकि वे समाज की छोटी, नीची, उपेक्षित दलित जातियों को उन्नत सिर दिलाये थे और स्वाभिमानी अनुभूतियों के अमृत घूँट पिलाये थे तभी तो त्रिलोचन जी ने गाया था किः–

"गिरे हुओं को खड़ा कर गया मान के लिए।" [5]

कबीर के इस चिन्तन स्रोत का एक आधार आदि ग्रन्थ वेद को मानते है। क्योंकि वेदों के स्रष्टा ऋषि लोग स्वतंत्र चिन्तक ही हैं। कबीर अपने समय के सभी धार्मिक संप्रदायों के नैतिक पतन को देखा था चाहे वह हिन्दु धर्म के हो या बोद्ध धर्म के या फिर इस्लाम धर्म के । कबीर ने यह करके दिखाया कि नैतिक बल से कैसे समाज को विशश्रंखलित या टूटने से बचाये और कैसे नैतिक बल के बलबूते से समाज को खड़ा कर दिया जाय।

ब्राह्मण को तुकारनेवाला काशी का वह जुलाहा विसंगतियां रचनेवाले सामाजिक धार्मिक शक्तियों पर निरंतर प्रहार करते रहे। त्रिलोचन शास्त्री अपने एकान्त में कबीर से बात करते थे। कबीर कहते रहे हैं यह फकीर तू मग्न रहना। त्रिलोचन कबीर के वर्ग के थे। सचमुच में वे कबीर की सामाजिक अनुभूति के कवि रहे थे। इसमें संदेह की गुंजाइश तक नहीं है। क्योंकि त्रिलोचन ने खुद लिखा है– करता हूँ आक्रमण धर्म के दृढ़ दुर्गों पर धर्म विनिर्मित अंधकार से लडते–लडते।

त्रिलोचन शास्त्री कहते हैं तुलसीबाबा भाषा मैं ने तुमसे सीखी। मेरी सजग चेतना में तुम रमे हुए हो। भाषा में कविता त्रिलोचन का बोध भी था और संस्कार भी। इस विषय में वे तुलसी और निराला की राह पर चलनेवाले हैं। त्रिलोचन का कवि व्यक्तित्व निराला के बाद तुलसी से प्राभावित थे। यह इसलिए है कि एक कविता का पुरुषार्थी है तो दूसरा भाषा का धनी। हर व्यक्तित्व एक वृक्ष की तरह होता है। वह विकसित होकर अपनी पहचान बनाता है। समाज में। तुलसीदास भी एक ऐसा ही वृक्ष था उसके पत्ते उनके धैर्य थे, हठ ही सुन्दर फूल था तपस्या बल था और शौर्य मूल था। दरअसल बरवै और अवधी तुलसी के बीच में अपनी ज़मीन खोज रहे थे। त्रिलोचन शास्त्री के अमोल काव्य की भाषा को पूर्वी अवधी कहा गया है। इस काव्य में निजता का उपार्जित काव्य बोध भी है और रचना का अन्तः सुख भी जो तुलसी के स्वान्तः सुखाय का ही बोध कराते हैं।

समाज में रहकर समाज का चित्रण ही कवि या कलाकार का व्यक्तित्व निश्चित करता है। जनता से जुडना समाज से जुडना किसी भी कवि केलिए ज़रूरी होता है। समाज के साथ–साथ उसकी शिथिलता का भी वर्णन करना उनका दायित्व है तुलसीदास ऐसे ही कवि थे जिनसे त्रिलोचन शास्त्री काफी प्रेरित थे इस दृष्टि से तभी तो तुलसीदास के संबंघ में त्रिलोचन ने लिखा था:–

"कह सकते थे तुम सब कड़वी, मीठी, तीखी।
प्रखर काल की धारा पर तुम जमे हुए हो।
और वृक्ष गिर गये, मगर तुम थमे हुए हो।"[6]

त्रिलोचन ने लोकभाषा अवधी और प्राचीन संस्कृत से प्रेरण ली थी, तभी तो उनकी कविता हिन्दी कविता की परंपरागत धारा से जुडी हुई है। यह भी गौर की बात है कि उनमें आधुनिकता की सुंदरता भी है और सुवास भी। इसलिए यह यहाँ कहना ज़रूरी है कि परंपरा के वाहक होते हुए भी त्रिलोचन आधुनिकता के वक्ता रहे थे। परंपरा और आधुनिकता का सुन्दर समन्वय कवि को तुलसीदास जी के समन्वयवादी दृष्टिकोण से काफी निकटतम ले जाता है। कवि श्तुलसीबाबाश कविता की अंतिम पंक्तियाँ कवि के एकसाथ प्रगतिशील एवं आधुनिक होने का प्रमाण हैंरू–

"यज्ञ रहा, तप रहा तुम्हारा जीवन, भू पर।
भक्त हुए, उठ गये राम से भी, यों ऊपर।"[7]

कवि का कहना है कि कर्म और भक्ति से तुलसीदास राम से भी ऊपर हो गये। तुलसी के इस श्रेष्ठत्व की परिभाषा आधुनिकता की भारतीय व्याख्या के रूप में भी देखा जा सकता है।

त्रिलोचन शास्त्रीजी आदिकवि वाल्मीकी से बहुत अधिक प्रभावित थे। वे अपनी कविता में आदिकवि वाल्मीकी की अभिधा शैली की श्रेष्ठत्व को ही स्वीकारते हैं। त्रिलोचन शास्त्री जी की भाषा के बारे में परमानन्द श्रीवास्तव ने लिखा है – त्रिलोचन के यहाँ एकदम अपरिचित अप्रचलित संस्कृत के तत्सम शब्द ठेठ देशज तद्भव शब्दों के साथ जितना सहजता से अनायास आते हैं और भाषा की अर्थ शक्ति के कारण बनाते हैं वह अन्यत्र विरल हैं। इसप्रकार त्रिलोचन शास्त्री जी अपने कवि व्यक्तित्व को तुलसीदास की परंपरा से जोडकर रखते है।

मिर्ज़ा आसाद उल्लाह बेग खान का जन्म 1797 में हुआ था। श्ग़ालिबश और श्असदश के नाम से ये लिखा करते थे। ये मुगल साम्राज्य के महान शायर रहे थे। यह मुगल काल के अखिरी शासक बहादूर शाह जफ़र के दरबारी कवि भी रहे थे। आगरा, दिल्ली और कलक्कत्ता में अपनी ज़िन्दगी गुजारे थे। ग्यारह वर्ष की अवस्था से ऊर्दू एवं फारसी में गद्य तथा पद्य लिखना आरम्भ कर दिया। इन्होंने फारसी और ऊर्दू में गज़लें लिखे हैं। परंपरागत गीत काव्य रहस्यमय रोमांचित शैली में ये लिखी गयी हैं।

ग़लिब का व्यक्तिगत जीवन काफी संघर्षपूर्ण रहा था। वह एक ऐसा शख्स था जो अपनी सोच के जादू से नयी दुनिया रचना चाहते थे। जिसने प्रेम और दर्शन के नये पैमाने तय किये तथा नये सपने देखे थेः

"नवीन आँखों में जो नवीन सपने हैं
वे ग़ालिब के सपने हैं।" [8]

उनका पूरा जीवन किस्मत के थपेडों से लडती रही, लेकिन थकी नहीं ज़िन्दगी ने उनकी राह में काँटे ही बोये थे पर वे उनका जवाब अपने लफ्जों के गुलों से देते रहे:–

"सुःख की आखों ने दुःख देखा
और ठिठोली की, यों जी बहलाया।" [9]

वे बचपन से ही अनियंत्रित स्वच्छंद स्वभाव के थे। ग़ालिब की ज़िन्दगी फक्कडपन में गुजरी थी। तभी तो त्रिलोचन ने यों लिखा था दृ

"दुनिया से काम नहीं था।
अपना कहने को क्या था? धन धाम नहीं था।
सत्य बोलता था जब जब मूह खोल रहे थे।"[10]

त्रिलोचन शास्त्री ग़ालिब के भावगत श्रेष्ठ कलात्मक सुरुचि के कवि थे। वे फारसी अरबी भाषाओं के निष्णात रहे थे। त्रिलोचन अंधकार में भी आशा को देख रहे थे सुन रहे थे। त्रिलोचन का कवि न आह करता है न विलाप करता है। ग़ालिब की तरह वह भी स्वभिमानि रहे थे। ग़ालिब की सरलता त्रिलोचन के कवि व्यक्तित्व में भी मौजूद है। त्रिलोचन शास्त्री अवकाश के समय हिन्दी गज़ल पर काव्यानुमान पर सोच रहे थे। शायद ग़ालिब की प्रेरणा इसका कारण रहा हो।

निष्कर्ष

त्रिलोचन शास्त्री प्रगतिशील चेतना संपन्न ऐसे साहित्यकार है जो समाज की विषमता को ममता में परिणित करने केलिए सदैव ही प्रयत्नशील रहे हैं। समाज में उठनेवाली हर ध्वनियों को उन्होंने बडी ही कुशलता से ग्रहण किया है। ग़ालिब की तरह त्रिलोचन भी अंधकार में भी आशा को देख रहे थे सुन रहे थे। कबीर की तरह कवि कर्म में मग्न रहे। धर्म विनिर्मित अंधकारों से लडते रहे। तुलसी की तरह प्रयोग धर्मी कवि रहे। नये– नये प्रयोगों से भाषा को, कविता को समृद्ध बनाये ।

संदर्भ सूची

1. त्रिलोचन शास्त्री, ध्वनिग्राहक, राष्ट्री भाग – 5, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, पृ–6
2. त्रिलोचन शास्त्री, ध्वनिग्राहक, राष्ट्री भाग – 5, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, पृ–6
3. त्रिलोचन शास्त्री, ध्वनिग्राहक, राष्ट्री भाग – 5, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, पृ–6
4. त्रिलोचन शास्त्री, काशी का जुलाहा, राष्ट्री भाग–5, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, पृ–32
5. त्रिलोचन शास्त्री, काशी का जुलाहा, राष्ट्री भाग–5, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, पृ–32
6. त्रिलोचन शास्त्री, 'तुलसी बाबा' राष्ट्री भाग–5, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, पृ–31
7. त्रिलोचन शास्त्री, 'तुलसी बाबा' राष्ट्री भाग–5, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, पृ–32
8. त्रिलोचन शास्त्री, ग़ालिब, राष्ट्री भाग–5, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, पृ–31
9. त्रिलोचन शास्त्री, ग़ालिब, राष्ट्री भाग–5, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, पृ–33
10. त्रिलोचन शास्त्री, ग़ालिब, राष्ट्री भाग–5, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, पृ–33
11. आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, प्र.सं. 2013.
12. कबीर की चिन्ता दृ बलदेव वंशी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वि. सं. 2008.
13. त्रिलोचन का कवि कर्म दृ विष्णुचन्द्रशर्मा, वाणी प्रकाशन प्र. सं. 2010